चिपमंक, मिंक और स्कंक

चयन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Book Title: Chipmunk Mink Aur Skunk (Chipmunk, Mink and Skunk)
Cover Page picture : Chipmunk, Mink, Skunk
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of North America

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

देश विदेश की लोक कथाऐं 5

चिपमंक, मिंक और स्कंक 7

1 चिपमंक के ऊपर धारी क्यों–1 9

2 चिपमंक के ऊपर धारी क्यों–2 13

3 चिपमंक के शरीर पर धारियॉ क्यों–3 15

4 चिपमंक के शरीर पर धारियॉ क्यों–4 18

5 चिपमंक और भालू 22

6 शोर मचाने वाला चिपमंक 27

7 चिपमंक और हयीना 31

8 मिंक की कहानी 34

9 मिंक और सूरज 43

10 चीचेका मिंक 51

11 रैवन और मिंक 55

12 स्कंक ने कायोटी को पछाड़ा 60

13 चीता और छोटा स्कंक 66

देश विदेश की लोक कथाऐं

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

चिपमंक, मिंक और स्कंक

कायोटी एक छोटा रेगिस्तानी भेड़िया, रैवन एक कौए जैसा पक्षी, चिपमंक एक गिलहरी जैसा जानवर, ईकटोमी एक परी मकड़ा, मिंक और स्कंक आदि जानवर उत्तरी अमेरिका के आदिवासियों की लोक कथाओं के ख़ास हीरो हैं।

कायोटी जो एक छोटा रेगिस्तानी भेड़िया है बहुत चालाक है। इसकी लोक कथाऐं हमने अलग से दी हुई हैं।[1] रैवन जो एक कौए जैसा पक्षी होता है उसकी बहुत सारी कथाऐं दुनियॉ बनाने से जुड़ी हुई हैं। इसकी भी लोक कथाऐं हमने तीन भागों में प्रकाशित की हुई हैं।[2] ईकटोमी की भी बहुत सारी कथाऐं हमने "चालाक ईकटोमी" के नाम की पुस्तक में प्रकाशित की हुई हैं।[3]

चिपमंक एक बड़ी गिलहरी जैसा जानवर होता है। मिंक एक चालाक और लालची जानवर है। इसकी खाल बहुत ख़ास होती है जो बहुत मॅहगी मिलती है और उसके कोट टोप और मफलर आदि कपड़े बनते हैं। स्कंक भी एक बड़ी गिलहरी जैसा ही जानवर होता है। इन तीनों की लोक कथाऐं हम यहॉ इस पुस्तक में दे रहे हैं।

तो लो पढ़ो ये लोक कथाऐं चिपमंक, मिंक और स्कंक की कि उन्होंने किस किस के साथ क्या क्या किया। ये सारी लोक कथाऐं हमने तुम्हारे लिये बहुत सारी जगहों से ख़ास तौर पर इकट्ठी की हैं।

---

[1] "Chalak Coyote-1", by Sushma Gupta written in Hindi language.

[2] "Raven Ki Lok Kathayen-1", published by Indra Publishers; "Raven Ki Lok Kathayen" published by Prabhat Prakashan, all written by Sushma Gupta in Hindi language

[3] "Chalak Iktomi", by Sushma Gupta written in Hindi language.

1 चिपमंक के ऊपर धारी क्यों–1[4]

बहुत पहले चिपमंक गिलहरी[5] भी दूसरी गिलहरियों की तरह ही था, यानी उसके शरीर पर भी कोई धारी नहीं थी। अफ्रीका के महाद्वीप के नाइजीरिया देश की यह कहानी यह बताती है कि उसको ये धारियॉ कैसे मिलीं जैसी कि आज हम उसके शरीर पर देखते हैं।

हालॉकि चिपमंक उत्तरी अमेरिका का एक जानवर है पर उसकी यह कहानी अफ्रीका की कहानियों में से पढ़ कर थोड़ा आश्चर्य होता है।

एक बार एक जंगल में जहॉ बहुत से जानवर रहते थे वहॉ इतनी ज़्यादा बारिश हुई कि वह जंगल बहुत घना हो गया। और इतना घना हो गया कि जानवरों को जंगल में चलना भी मुश्किल हो गया।

सो उन्होंने इस मुश्किल को आसान करने का तरीका ढूँढने के लिये एक मीटिंग की। उस मीटिंग में यह तय हुआ कि जो कोई भी जानवर इस जंगल में चलेगा उसको जंगल के रास्ते साफ करने के लिये पैसा देना पड़ेगा।

---

[4] How the Chipmunk Got Stripes? – a folktale from Nigeria, West Africa. Translated from the Web Site : http://allfolktales.com/folktales.php . Normally chipmunk is not an African animal, but still I found this story so I added it here.

[5] A type of squirrel with stripes mostly found in North America.

चिड़ियें जो हवा में उड़तीं थीं उनको यह टैक्स माफ था क्योंकि वे तो उस जंगल की जमीन का इस्तेमाल ही नहीं करतीं थीं।

चिपमंक साइज़ में तो बहुत छोटा था पर अपने जिद्दीपन में वह बहुत अक्खड़ था। उसने दूसरे जानवरों से कहा — "मैं कोई टैक्स नहीं देने वाला चाहे इसका मतलब यही क्यों न हो कि मैं जमीन पर नहीं चल सकता।"

सो उसने पेड़ों पर ही एक शाख से दूसरी शाख पर कूद कर इधर उधर जाना शुरू कर दिया। वह जमीन को छूता ही नहीं था। इस तरह से वह उस जंगल की जमीन का इस्तेमाल ही नहीं कर रहा था।

एक जानवर बोला — "आज नहीं तो कल और कल नहीं तो परसों, एक न एक दिन तो उसको जमीन पर आना ही पड़ेगा। तब वह टैक्स देगा।" सब जानवरों ने यह सुना और अपने अपने काम पर चले गये।

कई दिन बीत गये पर चिपमंक ने जमीन को नहीं छुआ। सारे जानवरों ने अपना अपना टैक्स दे दिया। यहॉ तक कि सबसे होशियार कछुआ भी इस टैक्स से नहीं बच पाया। पर चिपमंक पेड़ों से नीचे नहीं आया।

कुछ जानवर उसके लिये बहुत दुखी थे। वे बोले — "शायद उसके पास पैसा न हो इसी लिये वह टैक्स न दे पा रहा हो। नहीं तो वह बेचारा ज़िन्दगी भर के लिये पेड़ों पर ही क्यों रहता और जमीन

पर न आने का दुख सहता। यह हम लोगों के लिये बड़े दुख की बात है कि हममें से एक जानवर केवल टैक्स की वजह से इस तरह की ज़िन्दगी अपना ले।"

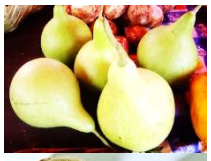

सो बहुत सारे जानवरों ने चिपमंक के लिये कुछ पैसे इकट्ठा करने का विचार किया। उन्होंने इरोको पेड़ के नीचे एक घड़ा[6] रख दिया और सब जानवरों को बोल दिया कि जो कोई भी जानवर चिपमंक की सहायता करना चाहे वह उस घड़े में कौड़ी[7] डाल सकता था जब तक कि उसमें टैक्स के लायक पैसे जमा न हो जायें।

एक चिड़िया ने चिपमंक से यह सब कहा तो चिपमंक को यह सब सुन कर बड़ा मजा आया। उसने कहा इसका मतलब तो यह हुआ कि उनके पास इससे अच्छा पैसे का और कोई इस्तेमाल ही नहीं है कि वे मेरा टैक्स दें।

जब रात हुई तो चोरी छिपे वह इरोको पेड़ के नीचे गया और कौड़ियों का वह घड़ा ले कर चलता बना।

अगली सुबह जब जानवरों को उसके इस गन्दे कारनामे के बारे में पता चला तो वे बहुत परेशान हुए। उन्होंने चिपमंक को पकड़ने की बहुत कोशिश की पर उनमें से कोई भी जानवर उसको न पकड़

[6] Translated for the word "Gourd". A gourd is a hard covering of big pumpkin like fruit. It is used after it is dried. See its picture above.

[7] Cowrie shell – the currency in use at that time. See its picture above.

सका। चिपमंक पेड़ों की शाखों पर बहुत तेज़ी से कूद कर इधर से उधर जा रहा था।

तब जानवरों ने चिपमंक को जंगल से बाहर निकाल दिया क्योंकि उसने उनके विश्वास और दया को धोखा दिया था। जंगल से निकलने के बाद चिपमंक आदमियों के बीच रहने चला गया।

उसके बाद जंगल में जानवरों की कई मीटिंग हुई और उनमें से एक मीटिंग में किसी ने पूछा — "क्या किसी को मालूम है कि चिपमंक ने उन पैसों का क्या किया?"

तो दूसरे ने जवाब दिया कि वह उस पैसे को किसी अच्छे इस्तेमाल में नहीं लाया बल्कि उन पैसों से उसने धारियॉ खरीद लीं। सबने अपना सिर हिला कर उसके लिये अफसोस प्रगट किया।

मुफ्त का मिला हुआ पैसा ऐसे ही बेकार के कामों में खर्च होता है जैसे कि चिपमंक ने किया – धारियॉ खरीदने में।

2 चिपमंक के ऊपर धारी क्यों–2[8]

चिपमंक के ऊपर धारी क्यों की कहानी अमेरिकन इन्डियन्स के आदिवासियों की इरोकोइ जनजाति[9] में भी कही जाती है। पर वे लोग इसे इस तरह से कहते हैं।

एक बार एक दादी और उसकी पोती साथ साथ रहतीं थीं। उनके पास एक खाल थी जिसको वे कम्बल की तरह इस्तेमाल करतीं थीं। हालॉकि वह खाल काफी पुरानी हो गयी थी और उसके बाल भी काफी झड़ गये थे फिर भी वे अभी उसको इस्तेमाल कर रही थीं।

एक बार उन दोनों ने जंगल में लकड़ी काटने के लिये कैम्प लगाया। वे साथ में अपनी उस खाल को भी ले गयीं ताकि रात में ठंड से बच सकें।

वे कुछ ही दिन उस जंगल में थीं कि उन्होंने देखा कि उनकी वह खाल ज़िन्दा हो उठी है और उनसे बहुत नाराज है। डर के मारे उन्होंने वह खाल नीचे फेंक दी और घर की तरफ जितनी तेज़ी से भाग सकतीं थीं भाग लीं।

[8] How Chipmunks Got Their Stripes – as viewed by American Indians. This is an American Indian story from their Iroquios people. Translated from the Web Site : http://www.firstpeople.us/FP-Html-Legends/How_Chipmunks_Got_Their_Stripes-Iroquois.html

[9] Iroquois Tribe of American Indians

पर जल्दी ही उन्होंने उस खाल को अपना पीछा करते हुए सुना। जब दादी को लगा कि वह खाल उनके काफी पास आ गयी है तो उसने गाना शुरू किया — "मैं और मेरी पोती अपनी जान बचा कर भाग रहे हैं।"

जब दादी का गाना खत्म हुआ तो उस खाल के पीछा करने की आवाज भी बन्द हो गयी थी पर कुछ देर बाद वह आवाज फिर से सुनायी पड़ने लगी।

जब वे घर पहुँचीं तो वह खाल जो एक भालू थी उनके इतने पास थी कि जैसे ही वे दरवाजा खोल कर घर में घुसीं और दरवाजा बन्द करने वालीं थीं कि उसने उनके ऊपर अपना पंजा मारा। इस से उनकी पीठ छिल गयी। फिर भी वे किसी तरह से घर के अन्दर घुस गयीं।

ये दोनों दादी पोती चिपमंक थीं। उसके बाद से चिपमंक के शरीर पर धारियॉ पड़ गयीं इसलिये चिपमंक के शरीर पड़ी ये धारियॉ उस भालू की दी हुई हैं।

3 चिपमंक के शरीर पर धारियॉ क्यों–3[10]

चिपमंक के शरीर पर धारियॉ क्यों की लोक कथाऐं अभी खत्म नहीं हुई। लो पढ़ो एक और लोक कथा। यह लोक कथा भी उत्तरी अमेरिका के आदिवासियों की इरोकोइ जनजाति[11] में कही सुनी जाती है।

यह बहुत पुरानी बात है कि सारी धरती अंधेरे से ढकी हुई थी। जितने भी प्राणी वहॉ रह रहे थे वे नहीं जानते थे कि दिन की रोशनी क्या होती है।

एक दिन जंगल के सारे जानवर यह विचार करने के लिये एक खुली जगह इकट्ठे हुए कि इसी अॅधेरे में रहना ठीक है या फिर दिन की रोशनी लाना ठीक है।

हिरन, चिपमंक, रैकून, भेड़िया, भालू और बहुत से दूसरे जानवर बहुत ऊॅचे ऊॅचे पहाड़ों पर चढ़ गये। वे पहाड़ इतने ऊॅचे ऊॅचे थे कि उनकी चोटी पर कोई भी पेड़ नहीं था। वहॉ केवल चट्टानें ही चट्टानें थीं।

उनके सिर के ऊपर अॅधेरे में सैंकड़ों की तादाद में तारे चमक रहे थे। जंगल के सभी जानवरों में सबसे बड़ा और सबसे ज़्यादा

[10] How the Chipmunk Got Its Stripes – a folktale from the Iroquois Tribe of Native Americans, North America. Translated rom the Web Site : https://projects.ncsu.edu/project/lancet/fifth_grade/chipmunk5th.pdf

[11] Iroquois Tribe of American Indians

ताकतवर जानवर था भालू। और पहाड़ की चोटी पर पहुँचने वालों में भी वही सबसे पहला जानवर था।

इस तरह भालू पहाड़ की सबसे ऊँची चोटी पर पहुँच कर नीचे जंगल की तरफ देखने लगा और अँधेरे में रहने के लिये कहने लगा। उसकी दलील यह थी कि जानवर अँधेरे में ज़्यादा अच्छी तरह से सो पायेंगे क्योंकि उनको जगाये रखने के लिये तब रोशनी वहाँ नहीं होगी।

पर और दूसरे बहुत सारे जानवर डरे हुए थे सो उन्होंने भालू की बात मान ली। रैकून बोला कि उसको अँधेरे से कोई परेशानी नहीं थी क्योंकि वह तो इतना तेज़ था कि उसको तो अँधेरे में भी बहुत सारा खाना मिल सकता था।

भेड़िया भी बहुत खुश था क्योंकि वह तो अँधेरा हो या रोशनी कभी भी अपना गाना गा सकता था।

लेकिन एक जानवर भालू के सामने खड़ा हुआ। वह था चिपमंक। चिपमंक जो जंगल का सबसे छोटा जानवर था उसने कहा कि अच्छा तो तभी रहेगा अगर अँधेरा और रोशनी दोनों ही हों। असल में चिपमंक बहुत ही होशियार जानवर था।

जैसे भालू ने अँधेरे के लिये बोलना शुरू किया तो चिपमंक ने रोशनी के लिये बहुत सारी दलीलें देनी शुरू कीं।

धीरे धीरे रात गुजरती रही। भालू बात करते करते थक गया पर चिपमंक की जबान तो चलती ही रही जैसे कि दुनियॉ की सारी ताकत उसके पास थी।

धीरे धीरे सब जानवरों को नींद आने लगी एक एक कर के वे सब सोने लगे। पर चिपमंक अभी भी बोले जा रहा था।

आखिर सुबह हुई तो सब जानवरों ने पहाड़ों की चोटी पर से पहली बार सूरज निकलता देखा सो जब वे जागे तो यह दृश्य देख कर आश्चर्यचकित रह गये।

चिपमंक ने तो यह देख कर इस पहाड़ी से उस पहाड़ी पर नाचना शुरू कर दिया। पर इससे भालू बहुत नाराज हो गया क्योंकि उसकी इच्छा पूरी नहीं हुई थी। वह बहुत ज़ोर से चिपमंक के पीछे भागा और पहाड़ के नीचे तक भागा चला गया।

भालू बहुत तेज़ भाग रहा था। वह जल्दी ही चिपमंक के पास तक पहुॅच गया और उसने बड़ा सा पंजा उसको पकड़ने के लिये बढ़ाया पर चिपमंक भी तेज़ था वह उससे बच कर भाग निकला लेकिन भालू भी कम नहीं था।

अब वह उसको पकड़ तो नहीं पाया हॉ उसने उसकी पीठ को जरूर खरोंच दिया जिससे उसकी पीठ पर धारियॉ बन गयीं। इसी लिये चिपमंक के शरीर पर आज तक धारियॉ देखी जाती हैं।

4 चिपमंक के शरीर पर धारियॉ क्यों–4[12]

चिपमंक के शरीर पर धारियॉ क्यों की एक और लोक कथा। यह लोक कथा उत्तरी अमेरिका के आदिवासियों की सेनेका जनजाति में कही सुनी जाती है।

यह बहुत पुरानी बात है जब चिपमंक के बादामी रंग के सुन्दर बाल हुआ करते थे। उस समय उसके शरीर पर कोई धारी नहीं हुआ करती थी।

एक सुबह एक चिपमंक जाड़ों के लिये अपने बिल में अपना खाना इकट्ठा कर रही थी। वह अपने मुँह के थैले में गिरियॉ और बैरीज़ भर भर कर बार बार अपने बिल के अन्दर जा रही थी और बार बार अपने बिल से बाहर आ रही थी।

तभी उसने देखा कि सामने से एक भालू उसकी तरफ चला आ रहा था। वह कीड़े मकोड़े ढूँढने के लिये अपने पैरों से लकड़ी के भारी भारी लट्ठे लुढ़काता चला आ रहा था और जो भी कीड़े मकोड़े उसको मिल जाते थे उनको अपने मुँह में रख लेता था।

चिपमंक ने देखा कि वह भालू उसके पास आता जा रहा था। चिपमंक भी उस समय कुछ कुछ बुड़बुड़ाती जा रही थी और कुछ कुछ खाती जा रही थी।

---

[12] How the Chipmunk Got Its Stripes – a folktale from the Seneca Tribe of Native Americans, North America. Translated rom the Web Site : http://www.planetozkids.com/oban/legends/why-chipmunks-have-stripes.htm

भालू एक लट्ठा लुढ़काते हुए बोला — "ज़रा मुझे तो देखो कि मैं कितना ताकतवर हूँ। मैं कुछ भी कर सकता हूँ।" कहते हुए उसने अपना एक पंजा जमीन में घुसाया और जमीन में से काफी सारे कीड़े निकाल कर अपने मुँह में रख लिये।

चिपमंक ने अपना सिर ऊपर उठाया और बोली — "ऐसा क्या?"

भालू रुका और रुक कर चारों तरफ देखा तो चिपमंक भी अपने बिल में से बाहर निकल कर उसके सामने आ गयी। भालू ने उसकी तरफ देख कर कहा — "हाँ यह सच है। देखो न तुम सारे जानवर मुझसे डरते हो।"

चिपमंक ने अपनी मूँछों पर ताव देते हुए कहा — "क्या तुम सुबह को सूरज का निकलना रोक सकते हो?"

भालू बोला — "मैंने इसकी कभी कोशिश नहीं की पर मैं पूरे यकीन के साथ कह सकता हूँ कि मैं ऐसा कर सकता हूँ। कल सुबह को सूरज नहीं निकलेगा। मैं भालू ऐसा कहता हूँ।"

ऐसा कह कर भालू तो पूर्व की तरफ मुँह कर के घास और पत्तियों पर आराम से लेट गया और चिपमंक यह सोच कर हँसते हुए अपने बिल में घुस गयी कि भालू कितनी गलती पर था।

भालू वहाँ रात भर जागता हुआ लेटा रहा। सुबह हुई तो चिड़ियाँ चहचहाने लगीं और पूर्व में लाली छा गयी। यह देख कर भालू अपने पिछले पैरों पर खड़ा हो गया और अपने आगे के दोनों

पैर पूर्व की तरफ करते हुए बोला — "सूरज आज नहीं निकलेगा।"

चिपमंक भी अपने बिल में से निकल आयी। अब सूरज को तो निकलना ही था सो वह तो निकल आया पर यह देख कर भालू बहुत परेशान हुआ। चिपमंक अपने मुँह पर अपना पंजा रख कर हँसी और हँस कर बोली — "सूरज भालू से ज़्यादा ताकतवर है। सूरज भालू से ज़्यादा ताकतवर है।"

और वह यह गाते हुए नाचने लगी — "सूरज तो निकल आया आहा सूरज तो निकल आया।"

चिपमंक जैसे छोटे से जानवर को अपने जैसे ताकतवर जानवर की हँसी उड़ाते हुए देख कर भालू को और ज़ोर का गुस्सा आ गया और चिपमंक तो नाचती गाती ही रही। भालू की हार पर खुशी के मारे चिपमंक तो धरती पर लोटने लगी।

वह धरती पर लोटते लोटते गा रही थी — "आहा सूरज तो निकल आया और भालू इस बात पर बहुत गुस्सा है।"

भालू को यह सब अच्छा नहीं लग रहा था सो उसने उसके ऊपर अपना एक पंजा रख दिया और चिल्लाया — "अगर मैं सूरज को निकलने से नहीं रोक सका तो कोई बात नहीं पर तुम अब सूरज डूबता हुआ नहीं देखोगी।"

चिपमंक यह सुन कर घबरा गयी और बोली — "ओह भालू जी मुझे आपका मजाक नहीं बनाना चाहिये था। मैं तो मरने के

लायक ही हूँ। पर इससे पहले कि आप मुझे खायें मुझे उस बनाने वाले की प्रार्थना तो कर लेने दीजिये जिसने सबको बनाया है।"

भालू बोला — "ठीक है जल्दी से करो।"

चिपमंक ने प्रार्थना करनी चाही पर भालू का पंजा उसे दबाये हुए था सो वह बोली — "भालू जी आपका पंजा तो बहुत भारी है उसने मुझे इतने ज़ोर से दबा रखा है कि मेरी तो आवाज ही नहीं निकल रही। अपन पंजा ज़रा सा उठा लीजिये ताकि मेरी आवाज तो निकले।"

भालू ने गुर्राते हुए अपना पंजा ज़रा सा उठा लिया। बस चिपमंक को भागने की जगह मिल गयी और वह अपने बिल की तरफ भाग ली।

भालू ने फिर से उसको अपने पंजे से पकड़ने की कोशिश की पर वह उसके पंजे से निकल गयी। चिपमंक उसके पंजे में तो नहीं आयी पर भालू के पंजे ने उसकी पीठ पर खरोंच की धारियॉ डाल दीं।

वे ही खरोंचें चिपमंक के शरीर पर आज धारियॉ जैसी दिखायी देती हैं। ये धारियॉ हमें इस बात की याद दिलाती हैं कि अपने से ताकतवर का मजाक बनाने का क्या फल होता है।

5 चिपमंक और भालू[13]

चिपमंक की यह लोक कथा उत्तरी अमेरिका में रहने वाले इन्डियन्स की इरोकोइ जनजाति में कही सुनी जाती है।

यह तब की बात है जब जानवर बोला करते थे। उस समय एक भालू इधर उधर घूम रहा था। ऐसा कहा जाता है कि भालू हमेशा अपने बारे में बहुत ऊँचा सोचते हैं। क्योंकि वे बहुत बड़े होते हैं और ताकतवर होते हैं इसलिये सचमुच में ही वे सब जानवरों में कुछ खास ही होते हैं।

सो एक बार यह भालू अपने पंजों से लकड़ी के बड़े बड़े लट्ठों को लुढ़काता हुआ खाने की खोज में चला जा रहा था। इस भालू को अपने ऊपर बहुत भरोसा था सो चलते चलते वह बोला — "मैं जो चाहे कर सकता हूँ।"

तभी एक छोटी सी आवाज आयी — "ऐसा है क्या?"

भालू ने नीचे देखा तो वहाँ एक छोटा सा चिपमंक[14] एक गड्ढे में से झाँक रहा था।

भालू बोला — "हाँ यह ठीक है। मैं जो चाहे वह कर सकता हूँ।"

---

[13] Chipmunk and Bear – a folktale from Native Americans of North America – Iroquois people. Translated from the Web Site : http://www.firstpeople.us/FP-Html-Legends/ChipmunkandBear-Iroquois.html

[14] Chipmunk is a squirrel-like animal with stripes mostly found in North America. See its picture above.

कह कर उसने अपना एक पंजा आगे बढ़ाया और उससे एक बड़ा सा लट्ठा लुढ़का दिया और बोला — "देखो यह मैंने कितनी आसानी से कर दिया। मैं सबसे ज़्यादा ताकतवर जानवर हूँ। मैं कुछ भी कर सकता हूँ। सारे जानवर मुझसे डरते हैं।"

चिपमंक ने पूछा — "क्या तुम सुबह को उगते हुए सूरज को भी उगने से रोक सकते हो?"

भालू ने कुछ पल सोचा और बोला — "मैंने कभी इस बात की कोशिश नहीं की पर मुझे यकीन है कि मैं उगते हुए सूरज को भी रोक सकता हूँ।"

चिपमंक ने पूछा — "क्या तुम यह बात यकीन के साथ कह सकते हो?"

"हाँ मैं यह बात यकीन के साथ कह सकता हूँ। तुम देखना कल सूरज नहीं उगेगा। मैं भालू यह कहता हूँ।" और भालू यह कह कर पूर्व की तरफ मुँह कर के बैठ गया।

उसके पीछे पश्चिम में सूरज रात के लिये डूब गया पर भालू वही बैठा रहा। चिपमंक रात को आराम से सोने के लिये अपने बिल में चला गया। वह यह सोच सोच कर आनन्द ले रहा था कि भालू भी कितना बेवकूफ जानवर है। यह नहीं जानता कि यह क्या कह रहा है।

सारी रात भालू वहीं बैठा रहा।

सुबह हुई तो पहली चिड़ियों ने चहचहाना शुरू किया और पूर्व मे पहली रोशनी चमकी जो सूरज निकलने से पहले चमकती है।

भालू बोला — "आज सूरज नहीं उगेगा।"

उसने चमकती हुई रोशनी की तरफ देखा और फिर बोला — "आज सूरज नहीं उगेगा।"

खैर सूरज तो उगा जैसे रोज उगता है। यह देख कर भालू तो बहुत परेशान हुआ पर चिपमंक बहुत खुश हुआ। वह हॅसा और हॅसता ही रहा फिर बोला — "सूरज भालू से ज़्यादा ताकतवर है।"

चिपमंक को इसमें इतना आनन्द आया कि वह अपने बिल में से बाहर निकल आया और चारों तरफ घूम घूम कर गोल गोल नाचने गाने लगा —

सूरज उग आया, सूरज उग आया
भालू बहुत दुखी है, पर सूरज तो उग ही आया

भालू तो वहॉ बहुत ही दुखी बैठा हुआ था जबकि चिपमंक खुशी से गाये जा रहा था, नाचे जा रहा था और इतना खुश था कि जमीन में लोट भी रहा था।

तभी भालू ने जितनी देर में मछली पानी में से निकलती है उससे भी जल्दी अपना पंजा उठाया और उसे जमीन में दे मारा। वह बोला — "शायद मैं सूरज को उगने से नहीं रोक सकता पर अब तुम दूसरा सूरज नहीं देखोगे।"

चिपमंक बोला — "ओह भालू नहीं। तुम सबसे ज़्यादा ताकतवर हो। तुम सबसे ज़्यादा तेज़ हो। तुम सब जानवरों में सबसे अच्छे हो। मैं तो बस तुमसे यों ही मजाक कर रहा था।"

पर भालू ने अपना पंजा वहॉ से नहीं हटाया।

चिपमंक फिर बोला — "ओ भालू, तुम अगर मुझे मार डालोगे तो ठीक करोगे। मुझको तो मरना ही चाहिये। पर मुझे खाने से पहले तुम मुझे एक बार, बस आखिरी बार भगवान की प्रार्थना तो कर लेने दो।"

भालू बोला — "करो करो, अपनी प्रार्थना जल्दी से करो। अब तुम्हारा आसमान में चलने का समय आ गया है।"

चिपमंक बोला — "ओ भालू, मैं मरना तो चाहता हूॅ पर तुम मुझको इतना ज़्यादा दबा रहे हो कि मैं सॉस भी नहीं ले पा रहा। मैं ठीक से बोल भी नहीं पा रहा।

अगर तुम अपना पंजा ज़रा सा ऊपर उठा लो तो मैं कम से कम सॉस तो ले सकता हूॅ और उस भगवान की प्रार्थना कर सकता हूॅ जिसने बड़े अक्लमन्द और ताकतवर भालू को बनाया और जिसने मुझ जैसे बेवकूफ, कमजोर और छोटे से चिपमंक को बनाया।"

यह सुन कर भालू ने अपना पंजा उठा लिया। हालॉकि उसने अपना पंजा बहुत ज़रा सा ही उठाया था पर उतनी ज़रा सी जगह ही उस छोटे से चिपमंक के वहॉ से भाग जाने के लिये काफी थी।

वह तुरन्त ही अपने बिल की तरफ दौड़ गया। भालू ने अपना पंजा फिर से चिपमंक के ऊपर रखने को गिराया पर चिपमंक तो यह जा और वह जा।

भालू इतना तेज़ नहीं था कि वह उस भागते हुए चिपमंक को पकड़ सकता पर फिर भी उसके पंजों के नाखूनों की खराशें उसकी पीठ पर खिंच गयीं और तीन पीली धारियॉ छोड़ गयीं।

आज तक चिपमंक की पीठ पर वे धारियॉ हैं और वे उसको हमेशा याद दिलाती हैं कि किसी के साथ क्या होता है जब कोई छोटा किसी बड़े की हॅसी उड़ाता है।

6 शोर मचाने वाला चिपमंक[15]

एक बार की बात है कि इन्डियन्स का एक गॉव था जिसमें एक चिपमंक अपनी दादी के साथ रहता था। वह चिपमंक बहुत शोर मचाता था तो उसकी दादी कहती थी — "मेरे प्रिय पोते, जब तुम जंगल में होते हो उस समय तुमको इतना शोर नहीं मचाना चाहिये। क्योंकि इस तरह से कोई बड़ा जानवर तुमको ढूँढ लेगा और खा जायेगा।"

पर वह उसकी सुनता ही नहीं था। वह रोज सुबह जंगल जाता और जंगल में चारों तरफ दौड़ता रहता जब तक उसको बैरीज़ नहीं मिल जातीं। फिर वह एक पेड़ पर चढ़ जाता और उसकी एक डाल पर बैठ कर बैरीज़ खाता रहता और शोर मचाता रहता।

शाम को उसकी दादी रोज उसको कहानी सुनाती। एक शाम उसकी दादी ने उसको एक बड़े साइज़ के आदमी[16] की कहानी

---

[15] The Noisy Chipmunk – a folktale from the Yakima Tribe of Native Americans, North America. Translated rom the Web Site :
https://www.warpaths2peacepipes.com/native-american-stories/noisy-chipmunk.htm
[This story has been featured in the book entitled "The Red Indian Fairy Book" by Frances Jenkins Olcott, Boston: Houghton Mifflin Co, 1917.

[16] Translated for the word "Giant"

सुनायी जो जंगल में चिपमंक और दूसरे जानवर ढूँढने के लिये घूमता रहता था।

उसने उसे आगे बताया कि उसके पास एक थैला भी रहता था जिसमें लाल गरम पत्थर के टुकड़े रखे रहते थे। जब भी वह कोई छोटा सा जानवर पकड़ लेता है तो वह उसको अपने थैले में डाल लेता है और अपने खाने के लिये पका लेता है।

छोटा चिपमंक बोला — "मुझे विश्वास नहीं होता दादी माँ कि ऐस कोई बड़े साइज़ का आदमी जंगल में था क्योंकि मैं तो जंगल में दो तीन साल से घूम रहा हूँ मैंने ऐसे बड़े साइज़ का आदमी न तो कहीं देखा और न ही कहीं सुना।"

दादी बोली — "फिर भी अगर तुम बहुत शोर मचाओगे तो वह बड़े साइज़ का आदमी आ कर तुमको पकड़ लेगा और खा जायेगा। बस तुम मेरी सुनो जो मैं तुमसे कहती हूँ।"

खैर एक दिन छोटा चिपमंक रोज की तरह से उछलता कूदता शोर मचाता जंगल गया। वहाँ जा कर वह बहुत देर तक बैरीज़ ढूँढता रहा। फिर उसने सोचा कि "मैं आज जंगल में बहुत दूर तक जाता हूँ क्योंकि मैं उस बड़े साइज़ वाले आदमी को देखना चाहता हूँ।"

सो वह जंगल में दूर और और दूर तक चलता ही चला गया। आखीर में वह एक टीले के पास आ पहुँचा जहाँ बहुत सारी बैरीज़

लगी हुई थीं। उनको देख कर वह बहुत खुश हुआ और वहाँ बैठ कर बैरीज़ खाने लगा। साथ में वह शोर भी बहुत मचाने लगा।

उसने सोचा कि शायद वह बड़े साइज़ का आदमी उसका शोर सुन ले और वहाँ आ जाये। इस तरह से वह उसको देख पायेगा।

अब हुआ यह कि बड़े साइज़ के आदमी ने वाकई उसको सुन लिया था क्योंकि वह उसी टीले के नीचे रहता था जिसके ऊपर वह छोटा चिपमंक बैठा हुआ था।

उसने उस छोटे चिपमंक की सारी आवाजें सुन ली थीं जो उसने निकाली थीं। वह धीरे धीरे अपने रहने की जगह से टीले के ऊपर रेंगता हुआ आ पहुँचा था। पर वह चिपमंक के पास तक नहीं पहुँच सका क्योंकि वह टीला बहुत ऊँचा था।

सो वह जितनी मुलायमियत से कह सकता था उतनी मुलायमियत से चिपमंक से बोला — "ओ छोटे चिपमंक ज़रा नीचे तो आओ। मेरे पास बहुत सारी बैरीज़ हैं मैं तुमको बहुत सारी बैरीज़ दूँगा।"

पर छोटे चिपमंक न कहा — "नहीं अगर मैं नीचे आया तो तुम मुझे पकड़ लोगे और खा जाओगे।"

सो वह वहीं टीले के ऊपर ही बैठा रहा। उधर वह बड़े साइज़ का आदमी भी वहीं बैठा रहा और उसका इन्तजार करता रहा कि कभी तो वह नीचे उतरेगा।

शाम हो गयी वह बड़े साइज़ का आदमी वहीं बैठा रहा। छोटा चिपमंक ऊपर बैठे बैठे थक गया सो उसने वहॉ से भागने का एक प्लान बनाया।

उसने एक झाड़ी से कई डालियॉ तोड़ीं और नीचे फेंक दीं। बड़े साइज़ के आदमी ने उनके नीचे गिरने की आवाज सुनी तो उसने सोचा कि वह चिपमंक था। वह झट से उनके ऊपर कूद गया पर वह तो चिपमंक नहीं था। वे तो केवल झाड़ी की डालियॉ थीं।

चिपमंक को वहॉ न पा कर उसने ऊपर देखा तो चिपमंक तो वहॉ भी नहीं था। वह तो वहॉ से कब का जा चुका था। यह देख कर उसको गुस्सा आ गया सो वह चिपमंक के पीछे दौड़ा और दो तीन कदम में ही उसे चिपमंक दिखायी दे गया।

वह तब अपने घर में घुस ही रहा था कि बड़े साइज़ वाले आदमी ने उसको दबोचने की कोशिश की पर छोटा चिपमंक उसके हाथों से फिसल गया और अपने घर में कूद गया।

इस तरह से वह बच तो गया पर इस फिसलने में बड़े साइज़ के आदमी की उँगलियों के खुरचने के निशान उस छोटे चिपमंक की पीठ पर पड़ गये। वे निशान ही हमें उसकी पीठ पर पड़ी धारियों के रूप में दिखायी देते हैं।

7 चिपमंक और हयीना[17]

या हयीना के शरीर पर धारियॉ क्यों।

एक बार की बात है कि एक चिपमंक मछलियॉ पकड़ने के लिये नदी पर गया। पहले उसने मछलियॉ नदी के किनारे पर रख लीं फिर उसने उनको खाना शुरू किया तो उसने खूब पेट भर कर मछलियॉ खायीं पर अभी भी बहुत सारी मछलियॉ बाकी बची थीं।

सो चिपमंक चिल्लाया — "किसको मछली खानी है वह यहॉ आये और मछली ले जाये।"

चिपमंक की आवाज सुन कर हयीना[18] वहॉ आया तो चिपमंक उससे बोला — "आज मुझे बहुत सारी मछलियॉ मिल गयीं तो आज ये मछलियॉ तुम ले लो।"

हयीना तो उन मछलियों को देख कर बहुत ही खुश हो गया और वे सारी मछलियॉ खा गया जितनी भी चिपमंक ने उस दिन पकड़ी थीं।

---

[17] Chipmunk and Hyena – a folktale from West Africa. Translated from book : "African Folk Tales" by African Folklore. This book is available on the Web Site : https://books.google.ca/books?id=xEYlDwAAQBAJ&pg=PT21&lpg=PT21&dq=chipmunk+folk+tales&source=bl&ots=nr54yOOYoG&sig=ijW7FY8WHGEVZxWBaPwj8Fa5eTM&hl=en&sa=X&ved=0ahUKEwjix9aAxvrUAhXH64MKHSSRCCg4ChDoAQgqMAE#v=onepage&q=chipmunk%20folk%20tales&f=false

[18] Hyena is a tiger-like animal. See its picture above.

चिपमंक यह देख कर बहुत गुस्सा हुआ कि हयीना उसकी पकड़ी सारी मछलियॉ खा गया था। उधर हयीना पेट भर कर मछलियॉ खा कर रेत पर लेट गया।

उसी समय वहॉ एक गिनी फाउल आया और एक पेड़ की शाख पर बैठ गया और अपने कपड़े पहनने लगा। कपड़े पहन कर उसने अपने पंख फैलाये।

उसको पंख फैलाते देख कर हयीना बोला — "काश ऐसी सुन्दर पोशाक मेरे पास भी होती।"

चिपमंक बोला — "मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ। अगर तुम मुझे सफेद मिट्टी और एक चाकू ला कर दे दो तो मैं तुम्हें गिनी फाउल से भी बढ़िया पोशाक बना कर दे दूँगा।"

अब हयीना तो बेवकूफ होते ही हैं। उसको यह पता ही नहीं चला कि उस समय चिपमंक उससे बहुत गुस्सा था क्योंकि उसने उसकी पकड़ी हुई सारी मछलियॉ खा ली थीं।

सो वह गया और एक बहुत तेज़ चाकू और सफ़ेद मिट्टी का एक बड़ा सा लौंदा ले कर आ गया। चिपमंक ने हयीना से कहा कि वह लेट जाये। हयीना लेट गया। अब चिपमंक ने उसकी पीठ चाकू से रंगनी शुरू कर दी।

बजाय रंगने के उसने उसकी पीठ पर लम्बी और चौड़ी चौड़ी खरोंचे डाल दीं और फिर उन खरोंचों को सफेद मिट्टी से ढक दिया।

हयीना दर्द से चिल्ला पड़ा तो चिपमंक बोला — "थोड़ा धीरज तो रखो। तुम्हारे पास भी उतनी ही रंगीन और सुन्दर पोशाक होगी जितनी गिनी फाउल के पास है।"

अपना काम खत्म कर के चिपमंक ने हयीना को जंगल में भेज दिया और हयीना अपने जख्म भरने के लिये जंगल में भाग गया और चिपमंक उसके जाने के बाद खूब हॅसता रहा।

"अब मैंने तुमसे अपनी सारी मछलियॉ खाने का बदला ले लिया। तुमने मेरी सारी मछलियॉ क्यों खायीं।"

उसके बाद से हयीना की खाल धारी वाली हो गयी।

8 मिंक की कहानी[19]

एक बार टुमटुम[20] रेत में से सीपी खोद रहा था और बच्चे केंकड़े पकड़ रहा था। ये बच्चे केंकड़े वहॉ समुद्र का ज्वार[21] छोड़ गया था। वह यह सब करते करते थक गया था सो वह आराम करने के लिये एक व्हेल पकड़ने वाली नाव की तरफ चल दिया जो वहीं समुद्र के किनारे लगी हुई थी।

उधर एक ऊॅचे पहाड़ का साया पड़ रहा था जिससे हवा ठंडी हो गयी थी। वहॉ जा कर वह भालू की एक खाल पर लेट गया। कुछ देर लेटने और आराम करने के बाद वह अपने घर की तरफ चल दिया।

तभी टुमटुम ने किसी को नाव चलाते हुए गाते हुए सुना

ओ मेरी पतवार मुझे किनारे पर ले चल, जैसे तूने पहले किया है
मुझे सूरज में पैदा होना है, मेरे बेटे, मेरे बेटे, मेरे अकेले बेटे

टुमटुम ने नाव के एक कोने से झॉका तो उसको एक लड़की दिखायी दी जो वहॉ समुद्र के किनारे रेत पर चल रही थी। वह लड़की उसी तरफ आयी जहॉ वह छिपा हुआ था। जब वह उधर

[19] Story of the Mink (Born-To-Be-In-The-Sun) – Taken from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/nam/nw/ttb/ttb44.htm
[20] Tum-Tum
[21] High tide

आयी जहॉ टुमटुम छिपा हुआ था तो टुमटुम ने उससे पूछा कि तुम कौन हो और कहॉ से आयी हो।

उस लड़की ने जवाब दिया — "मेरा नाम "अच्छी लगने वाली"[22] है। मैं "दस पहाड़ों के खुश"[23] शहर से आयी हूॅ और मैं "सूरज में पैदा होने वाले" की मॉ हूॅ।"

टुमटुम बोला — "मैं उसको जानता हूॅ वह मिंक है। आओ मैं उसे तुमको दिखाता हूॅ। इस समय वह एक मेंढक स्त्री[24] का इन्तजार कर रहा है जो मेरे बाबा "गरज चिड़े"[25] के टोटम पोल पर से उतर कर आने वाली है।"

उस सुन्दर लड़की ने उसका हाथ पकड़ा और चलते चलते उसने टुमटुम को अपनी कहानी सुनायी —

"एक सुबह जब मैं औटर मछली की खाल का कम्बल बना रही थी तो सूरज आया और मेरे कमरे के एक छेद में से मेरी पीठ पर चमकने लगा। उसके कुछ देर बाद ही मिंक का जन्म हुआ। वह बहुत जल्दी ही एक आदमी जितना बड़ा हो गया और वहॉ से चला गया।

[22] Tranaslated for the words "Nice to look at"
[23] Translated for the words "Pleasant Places in the Ten Mountains"
[24] Frog woman
[25] Translated for the words "Thunder Bird"

एक दिन वह मेरे पास आया और बोला — "मॉ, मैं एक मेंढक लड़की से शादी करना चाहता हूॅ।"

मैंने कहा — "पर तुमको उसकी टर्राने की आवाज अच्छी नहीं लगेगी बेटा।"

"वही तो मुझे अच्छी लगती है मॉ।"

मैंने कहा — "ठीक है अगर उसकी वह आवाज तुम्हें अच्छी लगती है तो फिर कर लो उससे शादी।"

और उन दोनों की शादी हो गयी। शादी के बाद वे एक नाव में बैठ कर पानी के उस पार दूर एक पहाड़ की तरफ चले गये और फिर वापस नहीं आये।"

टुमटुम उस सुन्दर लड़की को वहॉ ले गया जहॉ वह टोटम पोल खड़ा था। वहॉ उन्होंने देखा कि मिंक मेंढक लड़की से बात कर रहा था।

उसकी मॉ ने उससे नम्रता से कहा — "ओ मेरे "सूरज में पैदा होने वाले" बेटे।"

मिंक यह सुन कर मुस्कुराया और बोला — "मॉ हम लोग "गरज चिड़े" के टोटम पोल की सुरक्षा में आराम कर रहे थे। आओ वह तुमसे भी मिल कर बहुत खुश होगा।"

यह सुन कर "गरज चिड़ा" बिजली की तरह से अपनी ऑखें चमकाता हुआ और गरज के साथ पंख फड़फड़ाता हुआ टोटम पोल

के ऊपर से उड़ गया। उसने गॉव का एक चक्कर लगाया और फिर वहीं आ गया जहॉ उसके मेहमान खड़े हुए थे।

वहॉ आ कर उसने अपनी पंखों की पोशाक और मुखौटा उतारा और आदमी के रूप में आ गया। फिर उसने टोटम पर लगे सभी जानवरों को वहॉ से उतरने के लिये और अपना अपना मुखौटा उतार कर मिंक की मॉ से मिलने के लिये कहा।

उनमें से कुछ ने अपना मुखौटा उतारा और आदमी के रूप में आ गये। केवल दो लोग ही ऐसे थे जिन्होंने यह नहीं किया – एक था जूनाक और दूसरा था रैवन।[26]

मिंक की मॉ ने सूरज की कहानी फिर से सुनायी और बोली कि मैं सूरज को ढूँढने आयी हूँ। पर आसमान में उसके घर तक कैसे पहुँचा जाये कोई नहीं जानता था। गरज चिड़े ने कहा कि वह आसमान तक उड़ तो सकता था।

रैवन का विचार था कि उनको सूरज के नीचे तक पहुँचने का इन्तजार करना चाहिये ताकि फिर उसका घर आसमान में उतना ऊपर न रहे।

अन्त में टुमटुम बोला — "हमको चिड़े के तीर[27] बनाने चाहिये और उनको उसके घर पर मारने चाहिये। अगर किसी तरह से उनमें

---

[26] Zoonaqua and Raven
[My Note : Read other folktales of Raven in "Raven Ki Lok Kathayen-1" published by Indra Publications, "Raven Ki Lok Kathayen" published by Prabhat Prakashan and "Raven Ki Lok Kathayen-2" all written by Sushma Gupta in Hindi language. The third book is available from hindifolktales@gmail.com]

[27] Bird arrows

से एक भी उसके घर पर लग जायेगा तो फिर हम दूसरा मारेंगे और फिर तीसरा। इस तरह हम उसकी एक लम्बी डंडी बना लेंगे जो धरती से आसमान तक जायेगी। फिर हम वहॉ जा सकते हैं।"

यह विचार सबको ठीक लगा सो सब चिड़े के तीर बनाने में लग गये। मिंक ने एक बहुत मजबूत लकड़ी की कमान बनायी। जब सब कुछ तैयार हो गया तो टुमटुम ने वह कमान उठायी और तीरों की डंडी बनाने के लिये तीर मारने शुरू किये। पीछे से केवल एक बिना नोक वाला तीर रह गया।

जूनाक यानी "सोया हुआ" जागा और बोला — "इस तीर को मार कर सूरज को मैं जगाऊॅगा।" क्योंकि तभी बादल के एक टुकड़े ने सूरज को ढक लिया था।

जूनाक ने वह तीर चलाया तो वह आसमान की तरफ उड़ चला और जल्दी ही गायब भी हो गया। सभी वहॉ आश्चर्यचकित से खड़े देख रहे थे और इन्तजार कर रहे थे कि देखें अब क्या होने वाला है।

सूरज को तो बहुत सारी चालें आती हैं। जूनाक का तीर इतनी जल्दी वापस आ गया कि वह तो ऊॅघ भी नहीं पाया। और वह तीर उसके सिर पर इतनी ज़ोर से आ कर लगा कि उसके सिर पर एक गूमड़ा[28] पड़ गया। वहॉ खड़े सभी लोग हॅस पड़े।

[28] Translated for the word "Bump".

टुमटुम ने वह तीरों की लाइन हिलायी तो वह सीडर की एक रस्सी बन गयी। उसने और मिंक की मॉ ने उसके ऊपर चढ़ना शुरू कर दिया। उसके पीछे पीछे मिंक भी अपनी पत्नी मेंढक लड़की को अपनी पीठ पर चढ़ा कर ऊपर चढ़ा।

वे लोग बहुत देर तक चढ़ते रहे तब कहीं जा कर वे एक बड़े घर में आये। उस घर के दरवाजे से बहुत सारी रोशनी सारी दुनियॉ के ऊपर पड़ रही थी। उसके दरवाजे पर एक बहुत ही लम्बा और मजबूत आदमी हाथ में झाड़ू लिये खड़ा था। वह वहॉ उन सबका स्वागत कर रहा था। वह सूरज था।

मेंढक लड़की को यह सब इतना अजीब लगा कि उसने तो टर्राना ही शुरू कर दिया। सूरज ने उन सबको अन्दर बुलाया। उसने उस "अच्छी लगने वाली" के बारे में पूछा।

वह बोला — "मैंने तुमको पहले भी कहीं देखा है।"

मिंक तुरन्त ही बोला — "यह आपकी पत्नी है और मैं आपका बेटा हूॅ।"

यह सुन कर सूरज बोला — "ओह, अब मुझे याद आया। क्या तुम मुझे अपने पैर उधार दे सकते हो। मैं हर समय चलता रहता हूॅ न इसलिये मेरे पैर थक जाते हैं।

और अगर तुम बराबर झाड़ू नहीं लगाते रहे तो तुम्हारी बुआएॅ और दादियॉ, यानी बादल, यहॉ आ जायेंगी और यहॉ अन्दर अॅधेरा ही अॅधेरा हो जायेगा। और सारे आसमान में भी।

और अगर "गरज चिड़ा" जानता है तो वह बिजली चमका कर और गरज लुढ़का कर लोगों को डरा कर उनकी बारिश की बूँदों की बालटियों में से वे बूँदें भी बिखेर सकता है।

आओ, तुम लोग घर के अन्दर आ जाओ। वह गधा जरूर ही कोई शरारत करने वाला होगा।" यह कह कर सूरज ने फिर से झाड़ू लगानी शुरू कर दी।

मिंक और उसके दोस्त सब लोग अन्दर चले गये। अन्दर जा कर उन्होंने वहाँ बहुत सारी आश्चर्यजनक चीज़ें देखीं।

वहाँ की हर चीज़ चमकीली और बिल्कुल साफ थी। उसके चारों कोनों में चार मजबूत आदमी डंडे ले कर खड़े हुए थे जिनसे वे छत को सहारा दे रहे थे। उस घर में चारों तरफ सीडर की नक्काशी किये गये बक्से एक के ऊपर एक रखे हुए थे।

यह देख कर मिंक की उत्सुकता बहुत बढ़ गयी और वह इधर उधर घूम घूम कर देखने लगा कि उन बक्सों में क्या था। और उन बक्सों को खोलने और बन्द करने लगा।

एक बक्सा सूरज के निकलने से भरा हुआ था तो दूसरा सूरज की किरनों से। तीसरा इन्द्रधनुषों से भरा हुआ था तो चौथे बक्से में छिपने वाले सूरज रखे थे। चार बक्से अगर एक साथ खोल दिये जायें तब तो सब कुछ गड़बड़ हो जायेगा पर इस बात का मिंक को तो पता नहीं था।

दूसरे लोगों ने सूरज के मुखौटे, उसके झुनझुने, लकड़ी के नक्काशी किये गये बरतन, और उसके नाच के समय पहनने वाले कपड़े उठा लिये। खाने के बक्से तो सारी जगह फैले पड़े थे।

घर के बीच में एक छेद था जहाँ से धरती दिखायी देती थी और इसके नीचे ज़िन्दगी और मौत का कुँआ[29] था जहाँ से धरती पर मरे हुए लोगों की आत्माऐं ऊपर आती थीं और दोबारा जन्म लेने वाली आत्माऐं अपने जीवन की यात्रा शुरू करने नीचे धरती पर जाती थीं।

सूरज ने मिंक से फिर कहा — "तो तुम मुझे अपने पैर कब उधार दोगे मेरे बच्चे? देखो तो अभी यहाँ कोहरा हो रहा है।"

मिंक ने अपने पैर निकालने शुरू ही किये थे तभी वहाँ एक बहुत ज़ोर की चीख सुनायी दी जैसे हजारों उल्लू चीख पड़े हों। जो चार मजबूत आदमी छत को थामे हुए थे वे भी डर गये। सारा घर ऐसे काँप उठा जैसे कोई बहुत बड़ा भूचाल आ गया हो। सारे लोग परेशान हो उठे।

असल में गरज चिड़ा बाहर खड़ा था। बिजली चमक रही थी और गरज आसमान में इधर से उधर लुढ़क रही थी। उसको तो मजा आ रहा था।

सूरज के मेहमान उसके घर में इधर से उधर लुढ़के जा रहे थे जब तक वे सब उस ज़िन्दगी और मौत के कुँए में से नीचे नहीं गिर

[29] Well of Life and Death

गये। वे सब शान्ति से तैरते हुए जमीन पर ऐसे आ गिरे थे जैसे बरफ के टुकड़े किसी रेत के ऊपर आ गिरें।

जमीन पर पहुँच कर उन्होंने फिर से टोटम पोल पर चढ़ना शुरू कर दिया था। गरज चिड़ा फिर से सबसे पहले चढ़ा।

तभी टुमटुम की ऑख खुल गयी। उसकी मॉ पुकार रही थी — "ओ शैतान लड़के, तू यहॉ छिपा हुआ है। चल बाहर बारिश में से घर के अन्दर चल।"

9 मिंक और सूरज

मिंक की मॉ "समुद्र की शेरनी"[30] की जब तक शादी नहीं हुई थी तब तक वह चट्टानों पर धूप में बैठना बहुत पसन्द करती थी। जब उसके माता पिता को यह पता चला कि उसको बच्चा होने वाला है तो उन्होंने उससे बच्चे के बारे में पूछा कि वह किस का बच्चा है पर उसने कहा कि वह तो किसी भी लड़के को नहीं जानती। वह तो सारा समय घर में ही रहती है।

कुछ दिनों बाद उसने एक लड़के को जन्म दिया। उन्होंने उसका नाम "सूरज की तरह" यानी मिंक रखा।

जब वह लड़का थोड़ा बड़ा हुआ तो उसके सारे साथी उसे चिढ़ाते थे कि "तुम्हारे तो कोई पिता ही नहीं है", "तुम तो हमारे जैसे नहीं हो" आदि आदि। मिंक बेचारा घर आता और रोता। वह अपनी मॉ से पूछता कि मेरा पिता कौन है।

उसकी मॉ उसे समझाती कि वह उनकी बातों पर ध्यान न दे। उसका पिता था। वह फिर पूछता कि मेरा पिता कौन है तो वह सूरज की तरफ इशारा कर के कहती — "वह गरम गरम सूरज देख रहे हो न वही तुम्हारे पिता हैं क्योंकि उनके बिना इस दुनियॉ में कोई भी नहीं रह सकता।"

[30] Sea Lion who lives in the sea

जब मिंक ने अपने साथियों को यह बताया कि सूरज उसका पिता है तो वे बहुत ज़ोर से हॅसे और उसका बहुत मजाक बनाया। उसका इतना मजाक बनाया गया कि वह फिर शरारती बन गया।

अब जब भी उसको मौका मिलता वह हर एक को नीचा दिखाने की कोशिश करता, हर एक को बेवकूफ बनाता, उनको धोखा देता, और चोरी करने की कोशिश करता। जब वह बड़ा हो गया तो वह इधर उधर जाता और उनके साथ गन्दी गन्दी चालें खेलता।

एक दिन उसने आसमान की तरफ देखा और सोचा कि ये सूरज और चॉद उससे ज़्यादा होशियार तो नहीं हैं। दुनियॉ को रोशनी देना तो बहुत आसान काम है। मैं ऊपर जाता हूॅ और उनसे यह दुनियॉ को रोशनी देने का आसान काम मॉग लेता हूॅ।

बच्चो तुमको आसमान में जाना बहुत मुश्किल लगेगा पर यह बड़ा आसान काम है। उसने एक ऐसे दिन का इन्तजार किया जिस को प्रशान्त महासागर के उत्तर पश्चिमी किनारे पर रहने वाले अच्छी तरह जानते हैं। सो उस दिन बारिश के मौसम में वह सीडर के एक पेड़ के ऊपर चढ़ गया और वहॉ से उसे आसमान का रास्ता मिल गया।

वह वहॉ से पूर्व की तरफ चल दिया क्योंकि सूरज तो पूर्व से ही निकलता है। चलते चलते उसको अॅधेरा हो गया और उसको लकड़ी का एक घर मिला जिस पर सूरज का निशान बना हुआ था।

उसने उस घर का छोटा सा दरवाजा खटखटाया जो एक लम्बे से लट्ठे में से काट कर बनाया गया था। एक औरत अन्दर से बोली — "तुम कौन हो?"

मिंक बोला — "मैं मिंक हूँ – धूप का बेटा।"

उस औरत ने कहा — "अन्दर आ जाओ। तुम्हारे पिता सूरज जल्दी ही घर आने वाले हैं। पर फिर वह जल्दी ही पश्चिम की तरफ चले जायेंगे।"

जब सूरज घर आया तो उसने अपनी पत्नी से कहा — "मैं मिंक को जानता हूँ। वह बहुत ही चालाक है। मैंने उसकी चालें देखीं हैं उस पर भरोसा नहीं किया जा सकता। मैं उससे बात करूँगा और भाँपने की कोशिश करूँगा कि वह किस लिये आया है।"

मिंक सूरज से मिलने गया और बोला — "तो आप मेरे पिता हैं?"

सूरज बोला — "हाँ, मैं ही तुम्हारा पिता हूँ।"

मिंक बोला — "मैं आपको आसमान में उधर से उधर जाने में सहायता करने आया हूँ।"

सूरज बोला — "तुम ठीक समय पर आये हो। अब मैं उतना जवान नहीं रह गया हूँ, बूढ़ा हो चला हूँ और थक गया हूँ। कल मैं तुम्हें बताऊँगा कि यह काम कैसे करना है।"

अगले दिन जब मिंक को जगाया गया तो उसने देखा कि सूरज अपनी चमकीले पीली फ़र के कपड़े और सूरज का चेहरा पहने खड़ा

है। उसके हाथ में एक बड़ी सी टार्च है जिसको जला कर वह दुनियॉ को रोशनी देता है।

सूरज बोला — "मैं पूर्व से पश्चिम की तरफ जाता हूँ पर मैं दुनियॉ वालों की बातों पर ध्यान नहीं देता। कुछ लोग मुझसे कहते हैं कि उनको ज्यादा धूप चाहिये ताकि हम ज़्यादा गर्म रह सकें। या फिर कहते हैं कि यहॉ से बादलों को हटाओ पर मैं किसी की बात नहीं सुनता। मैं केवल पूर्व से पश्चिम की तरफ जाता हूँ मैदानों को पार करता हुआ पहाड़ों के ऊपर से होता हुआ समुद्र तक।"

मिंक ने नीचे की तरफ देखा तो घास के चमकते हुए मैदान देखे और कोलम्बिया नदी देखी। फिर वे पेड़ों से ढके हुए पहाड़ों के ऊपर आ गये। उसके बाद वे बरफ से ढके पहाड़ देखे जिनके ऊपर उसने सूरज की चमकती हुई टार्च देखी।

पहाड़ों के पश्चिम की तरफ बादलों और कोहरे ने जंगलों और नदियों को ढक रखा था। मिंक को सुनायी दिया — "काश यह सूरज इन बादलों और कोहरे को हटा देता।" "ओह, मैं तो इस बारिश से थक गया हूँ। यह सूरज यहॉ रुकता क्यों नहीं और हमें और गरमी क्यों नहीं देता?" जब वे घर लौटे तो बीच में उनको पीला चॉद मिला।

अगले दिन मिंक ने सूरज से बहुत प्रार्थना की कि वह उसको टौर्च ले जाने दे मगर सूरज ने कहा कि वह अभी उसके लिये तैयार नहीं था। पर जब वे अपनी यात्रा पर निकलने लगे तो उसने मिंक

को अपना चमकीली पोशाक और चमकीला चेहरा पहनने को दे दिया।

इस बार बड़े बड़े बादल मैदानों में इधर उधर भाग रहे थे। और जब भी सूरज अपनी ऑख झपकाता एक बिजली सी चमक जाती। पर सूरज अपने तरीके से चलता गया और चलता गया। उन्होंने फिर लोगों की बातें सुनी पर सूरज तो चलता ही चला गया चलता ही चला गया। उसने किसी की बात पर ध्यान नहीं दिया।

तीसरे दिन मिंक ने फिर सूरज से प्रार्थना की कि वह उसको टार्च दे दे। इस बार सूरज ने उसको वह टार्च ले जाने दी पर उसने कहा कि वह उसके साथ चलेगा। वह बोला — "हम लोग रोज की तरह पूर्व से पश्चिम की तरफ चलेंगे पर हम लोग धरती के लोगों की बातें नहीं सुनेंगे। इसके अलावा तुम बीच में कहीं नहीं रुकोगे।"

अगले दिन मिंक सबेरे उठा और पूर्व से पश्चिम की तरफ चल दिया। वह अपने चमकीले चेहरे में बहुत ही सुन्दर सूरज लग रहा था।

उसका पिता उसकी यात्रा में उसके साथ था। जब रास्ते में लोग धूप के लिये चिल्लाये तो वह उनको अनसुना कर के चलता ही रहा – मैदानों के पार, पहाड़ों के ऊपर, कोहरे से भरे हुए समुद्र के किनारों के ऊपर और समुद्र के ऊपर तक।

अगले दिन मिंक ने जिद की कि वह अकेले ही यह सब कर सकता था सो अगले दिन सूरज ने यह काम उसको थमा दिया।

सूरज ने उसको दोबारा अपनी बातें दोहरायीं कि धरती के लोग कुछ भी कहते रहें पर तुम कुछ नहीं सुनना।

सो मिंक आसमान की अपनी पहली यात्रा के लिये अकेला ही तैयार हुआ। वह अपने चमकीली पीले फ़र की पोशाक और पीले चेहरे को पहने हाथ में टार्च लिये चल दिया। सूरज को उसके ऊपर भरोसा नहीं था सो वह भी कुछ दूरी पर रह कर उसको देखता जा रहा था। इस तरह दोनों ने अपनी उस दिन की यात्रा खत्म की।

पहले तो मिंक ठीक से चलता रहा पर जब वह समुद्र के बरसाती किनारों के पास पहुँचा तो उसका मन डोल गया।

वहाँ के लोगों ने जब यह कहना शुरू किया कि हमें थोड़ी सी धूप और चाहिये, हमारे शमन ने तो कहा था कि आज काफी धूप निकलेगी तो मिंक से न रहा गया। वह सोचने लगा कि वह वहाँ कुछ जोर से चमकेगा सो वह वहाँ रुक गया और उसने अपनी टार्च धरती की तरफ कर दी।

जल्दी ही बादल इधर उधर बिखर गये, और सूरज की गरमी से वहाँ बहुत गरम हो गया। अब लोग वहाँ तेज़ गरमी से चिल्लाने लगे। जंगल सूखने लगे और समुद्र के किनारे की चट्टानें गरमी की वजह से टूटने लगीं।

सूरज ने भी धरती को लोगों की आवाजें सुनी कि वे बहुत गरमी से परेशान हो रहे थे सो वह जल्दी से यह देखने के लिये उठा

कि उसका बेटा क्या कर रहा था। उस ने देखा कि उसका बेटा रुका हुआ था और नीचे की तरफ देख रहा था।

सूरज मिंक पर चिल्लाया — "मुझे मालूम था कि तुम पर भरोसा नहीं किया जा सकता। मैंने तुमसे कहा था कि तुम नीचे नहीं देखोगे बस चलते रहोगे पर तुम नहीं माने। मैं अपना काम तुमसे वापस लेता हूँ।" कहते हुए सूरज ने अपना चमकीला चेहरा उससे वापस ले लिया और उसे ठोकर मार कर नीचे धकेल दिया।

मिंक तुरन्त ही नीचे गिर पड़ा और उसकी टार्च बुझ गयी। उसके अन्दर का मसाला जो उसमें जलता था मिंक के कपड़ों पर गिर पड़ा जिससे उसके सारे कपड़े महक गये। इत्तफाक से मिंक पानी में गिरा। अब मिंक तो अपनी माँ की तरह पानी में कूदने में होशियार था सो वह पानी में आसानी से तैर गया।

जब तक सूरज ने दूसरी टार्च जलायी तब तक पूरा अँधेरा हो गया था और वह था दुनियाँ का पहला सूरज ग्रहण। आजकल भी सूरज को जब कभी ग्रहण लगता है तो वह धरती के लोगों को यह बताने के लिये कि वे किसी भी दैवीय ताकत की जगह नहीं ले सकते।

उसके बाद मिंक बहुत ही शरमिन्दा हुआ। यद्यपि उसके पास सूरज की वह चमकीली पीली पोशाक अभी भी मौजूद थी जो सूरज की टार्च के मसाले से गन्दी हो चुकी थी, परन्तु फिर भी वह समुद्र

की शेरनी और आसमान के सूरज का बेटा अब छिपा छिपा रहता था और दूसरों से बचता रहता था।

10 चीचेका मिंक[31]

चीचेका मिंक[32] दूसरों के मामले में दखलन्दाजी करने वाला एक जानवर था।

एक दिन वह एक जंगल से हो कर जा रहा था तो वह इधर उधर देखने के लिये एक सीडर के पेड़[33] पर चढ़ गया। वहॉ से उसे एक झील दिखायी दी। उसने देखा कि उस झील के किनारे पर एक आदमी अपनी नाव के साथ कुछ कर रहा था।

बस मिंक उस पेड़ से नीचे उतरा और उस आदमी के पास पहुँचा। वहॉ जा कर उसने देखा कि वह हिरन के कुछ ढॉचे उस नाव में भर रह था।

उसने उस आदमी को नमस्ते की और फिर पूछा कि क्या वह उन हिरन के ढॉचों को उसकी नाव में रखवाने में उसकी सहायता कर सकता था। वह आदमी राजी हो गया।

---

[31] Cheecheka Mink – Taken from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/nam/nw/ttb/ttb17.htm

[32] Mink is a dark colored semiaquatic species of rodent native to North America. See its picture above.

[33] Cedar tree. See the picture of a cedar tree. Cedar trees are of various types, this is one of them.

मिंक ने उस सब ढॉचों को मन ही मन गिन लिया। वे कुल मिला कर दस थे। उसको लगा कि इस समय उसको वहॉ खाना मिलने का कुछ मौका है।

यह सोच कर उसने उस अजनबी से पूछा कि क्या वह उन ढाचों को उसके घर में रखवाने के लिये उसके साथ उसके घर चल तक चल सकता था? वह आदमी इस पर भी राजी हो गया।

मिंक नाव में बैठ गया और उस आदमी ने उस नाव की पतवार सॅभाल ली। वह उस नाव को बड़ी मेहनत से खेने लगा। आखिर वे एक गॉव के पास आ गये जो झील के किनारे से पचास गज पीछे बसा हुआ था।

अचानक मिंक ने देखा कि नाव में से हिरन उतारे जा रहे हैं और घरों में ले जाये जा रहे हैं। यह सब मिंक को बड़ा अजीब सा लग रहा था क्योंकि वहॉ उसको कोई ऐसा आदमी दिखायी नहीं दे रहा था जो उनको उतार रहा हो।

वे हिरन सब अपने आप ही उतर रहे थे और अपने आप ही घरों को जा रहे थे। यह तमाशा देख कर मिंक ने उस आदमी पूछा कि उस गॉव में कितने घर हैं। उस आदमी ने जवाब दिया कि इस गॉव में करीब चालीस घर हैं और हर घर में तीस आदमी रहते हैं।

मिंक ने सोचा कि वह उन गॉव के घरों को जा कर देखेगा कि वे घर कैसे हैं। जब वह उन घरों को देखने गया तो वहॉ उसने पत्थर के चाकू, भाले, तीर कमान आदि पड़े हुए देखे।

सब घरों मे आग जल रही थी। जलाने वाले पत्थर[34] लकड़ी के बक्सों में रखे हुए थे। खाना उबालने के लिये पानी रखा हुआ था। नाव में जो हिरन लाये गये थे उनको भूनने का सामान भी रखा था। ऐसा लग रहा था जैसे वहॉ खाना बन रहा था और ऐसा हर घर में हो रहा था पर फिर भी कहीं कोई आदमी दिखायी नहीं दे रहा था।

यह देख कर चालाक और लालची मिंक को एक चालाकी सूझी कि क्यों न वहॉ से वह जो चाहे वह ले ले और उसको नाव में लाद कर अपने घर ले जाये।

यह सोचते हुए उसने जो कुछ वह लाद सकता था उसने वह सब नाव में लादा और नाव में बैठ कर नाव खे दी। वह किनारे से अभी केवल दो सौ गज दूर ही गया होगा कि उसने अपनी नाव किसी अनदेखी रस्सी से पीछे खींची जाती हुई महसूस की।

बहुत कोशिश करने के बाद भी वह अपनी नाव को वहॉ से सौ गज से ज़्यादा दूर नहीं खे सका। जब भी वह नाव को आगे खेने की कोशिश करता वह अनदेखी रस्सी उसको वापस खींच लेती।

वह सारी दोपहर उस नाव को वहॉ से ले जाने की कोशिश करता रहा पर वह उसको वहॉ से ले कर नहीं जा सका। वह बहुत थक गया था, पसीने से तर बतर था और अब उसको भूख भी लग आयी थी।

[34] Flint stones (called Chakamak patthar in Hindi – they help in starting fire)

आखिर मिंक ने अपनी कोशिश छोड़ दी और अपना मिंक का रूप रख कर तैर कर उस झील के दूसरे किनारे तक आ गया। उसने फिर उन गुप्त लोगों के गॉव में जाने का नाम नहीं लिया।

11 रैवन और मिंक[35]

एक बार रैवन और मिंक[36] ने यह निश्चय किया कि वे लोग वहाँ जा कर रहेंगे जहाँ मछलियाँ बहुत होती हैं। वहाँ जा कर वे एक बड़ा भालू भी मारने वाले थे। सो वे उस जगह की तरफ चल दिये।

दोनों के पास एक एक नाव थी सो वे अपनी अपनी नाव में बैठ कर वहाँ पहुँच गये जहाँ उनको एक भालू घूमता दिखायी दे गया पर वे उसका कुछ नहीं कर सके क्योंकि वे उसको भाला मारने से बहुत डर रहे थे।

तब रैवन ने मिंक से कहा — "तुम एक मछली की पूँछ में छेद कर दो। इससे मैं उसके अन्दर चला जाऊँगा। और क्योंकि यह हो सकता है कि तब वह घूमने वाला भालू मुझे खा ले और जब वह मुझे निगल लेगा तो मैं उसकी छाती काट कर बाहर निकल आऊँगा।

जब वह भालू मेरे पास आये तो तुम उसको ज़रा ध्यान से देखना। मैं जब उसमें से कूद कर बाहर आऊँ तो तुम उसको भाला मार देना। हो सकता है कि वह तभी मर जाये।"

---

[35] Raven and Mink – a folktale from American Indians, North Amrica. Translated from the Web Site : http://www.ankn.uaf.edu/NPE/CulturalAtlases/Yupiaq/Marshall/raven/RavenandMink.html

[36] Mink is a large mouse type animal. See its picture a bove. Its fur is sold at a very high price. People make clothes of its skin.

मिंक राजी हो गया और उसने रैवन को एक मछली की पूँछ में बन्द कर के उस रास्ते पर डाल दिया जिस पर से भालू जा रहा था।

कुछ देर बाद वहाँ कुछ आया तो उन्होंने देखा कि वह भालू था। पर जब भालू ने उस मछली की पूँछ को खाने के लिये अपना मुँह खोला तो रैवन ने कॉव कॉव किया और उस मछली की पूँछ में से उड़ गया।

वह डर गया था इसलिये उस मछली की पूँछ के अन्दर नहीं रह सका। यह देख कर वह भालू भी वहाँ से भाग गया।

मिंक ने रैवन से पूछा — "यह तुमने क्या किया? तुमने उसे जाने कैसे दिया जबकि वह तुम्हारे इतने पास आ चुका था? अब जब शाम हो जायेगी तब तुम्हारी बजाय यह काम मैं करूँगा।"

सो जब शाम हुई तो मिंक मछली की पूँछ में जा कर बैठ गया। रैवन बोला जब तुम बाहर आओगे तब मैं उसको भाला मारूँगा।

आखिर एक भालू उधर आया और उसने वह मछली की पूँछ निगल ली। जैसे ही भालू ने वह पूँछ निगली वह इधर उधर नाचने लगा। उसी समय मिंक भी उसकी छाती फाड़ कर बाहर निकल आया।

इसी समय रैवन को भालू को भाला मारना था सो उसने अपना भाला उसको फेंक कर मारा। उसने भाला मारा तो पर उसका भाला दो पेड़ों के बीच में अटक कर रह गया और वह भालू तक नहीं पहुँच सका।

रैवन ने अपने भाले को उन पेड़ों से बाहर निकालने की कोशिश भी की पर इतनी ही देर में मिंक ने भालू की छाती फाड़ कर जो छेद किया था वह भालू उसी छेद होने से मर गया।

मिंक ने फिर आ कर पूछा — "अरे क्या हुआ? तुम तो जब मैं बाहर आ रहा था तब उसको भाला मारने वाले थे? तुमने अपना भाला अपने पेट के सामने क्यों रखा हुआ था? क्या इसलिये कि तुम उसको एकदम से न मार सको?"

रैवन बोला — "नहीं नहीं। मेरा भाला दो पेड़ों के बीच में अटक गया था इसलिये मैं उसको नहीं मार सका।"

दोनों ने मिल कर फिर उस भालू की खाल निकाली और उसका मॉस काटा। उन्होंने उसकी चर्बी भी निकाली।

रैवन बोला — "जैसे हमारे पुरखे लोग निकालते थे वैसे ही हम भी अब इस चर्बी में से इसका तेल निकालेंगे। वे पहले इसकी ऑतें निकाल लेते थे और उसके बाद उसका तेल निकालते थे। मैं तुमको दिखाऊँगा कि वे यह काम कैसे करते थे।"

सो मिंक तो चर्बी पकाने पर लग गया और रैवन उसकी ऑत को रास्ते पर बिछाने के लिये ले कर चला गया।

भालू की ऑत वाकई बहुत लम्बी होगी जो वह इतने लम्बे रास्ते पर बिछ पायी। रैवन ने ऑत के एक किनारे पर एक गॉठ बॉध दी ताकि उधर से तेल बाहर निकल कर जमीन पर न गिर जाये।

और उसका दूसरा सिरा पकड़ कर वह बोला — "मैं अब जंगल की तरफ चलता हूँ और तुम उसका तेल पका कर उसकी ऑत में भरना। वह जल्दी ही भर जायेगी। हमारे पुरखे यह काम इसी तरह से करते थे।"

सो मिंक यह काम करता रहा। वह ऑत में तेल भरता रहा और रैवन जंगल में चला गया। उसने जंगल का एक चक्कर लगाया और वहाँ आने का निश्चय किया जहाँ वह ऑत खत्म होती थी।

मिंक उस ऑत को भरता रहा पर वह तो भरने पर ही नहीं आ रही थी। तेल ऑत में गिरता जा रहा था गिरता जा रहा था पर ऑत थी कि वह तो भर ही नहीं रही थी। उसको लगा कि रैवन जरूर ही ऑत के आखिरी सिरे पर खड़ा होगा।

सो उसने अपना काम रोक दिया और ऑत के आखिरी सिरे पर आया तो उसने देखा कि रैवन तो वहाँ खड़ा खड़ा तेल पी रहा था। "आहा तो इसी लिये यह ऑत तेल से नहीं भर रही। अब मुझे पता चला।"

मिंक को यह देख कर बहुत गुस्सा आया। उसने एक जलती हुई लकड़ी उठायी और रैवन के पीछे दौड़ा और उसके सिर पर मारी। रैवन पीछे गिर पड़ा और बेहोश हो गया।

मिंक ने उस ऑत के उस सिरे को फिर से बॉधा और फिर वहीं वापस चला गया जहॉ वह चर्बी पका रहा था। आखिर रैवन को होश आया तो वह जंगल में भाग गया।

मिंक फिर से अपने काम पर लग गया था। इस बार वह ऑत भर गयी थी। जब शाम हो गयी तब रैवन वहॉ लौटा। उसके चेहरे पर उस जली हुई लकड़ी की कालिख लगी हुई थी।

मिंक ने हॅस कर पूछा — "अरे, तुम्हें क्या हुआ? तुम्हारे चेहरे पर यह कालिख कैसे लगी हुई है?"

रैवन ने जवाब दिया — "मैं एक जला हुआ पेड़ खिसका रहा था जो मेरे पुरखे छोड़ गये थे वही मेरे ऊपर गिर पड़ा इसी से मेरे चेहरे पर यह कालिख लग गयी।"

मिंक यह सुन कर हॅस पड़ा।

12 स्कंक ने कायोटी को पछाड़ा[37]

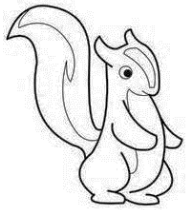

एक दिन की बात है कि कायोटी को बहुत भूख लगी थी। वह खाने की तलाश में इधर उधर घूम रहा था कि उसको एक स्कंक[38] मिल गया।

कायोटी स्कंक से बोला — "स्कंक भाई, तुम भूखे लगते हो और मुझे भी भूख लगी है। अगर मैं तुम्हारे लिये कुछ खाने का इन्तजाम करूँ तो क्या तुम मेरी चाल में मेरी सहायता करोगे?"

स्कंक बोला — "भला यह भी कोई पूछने की बात है कायोटी भाई? तुम जो कहोगे मैं वही करूँगा।"

इस पर कायोटी बोला — "देखो, उस पहाड़ी के उस पार गिलहरियों का एक गॉव है। तुम वहॉ चल कर मरे हुए का नाटक करो मैं बाद में पहुँचता हूँ। फिर उनसे कहूँगा कि आओ अपने मरे हुए दुश्मन की खुशी में नाचते हैं।"

स्कंक की समझ में कुछ भी नहीं आया कि इस नाटक से खाने का इन्तजाम कैसे होगा पर कायोटी बोला — "तुम चलो तो सही और मरने का नाटक करो बाकी सब मैं देख लूँगा।"

स्कंक राजी हो गया। वह गिलहरियों के गॉव में पहुँचा और वहॉ जा कर मरा हुआ सा लेट गया। कुछ ही देर में कायोटी भी

[37] Skunk Outwits Coyote – a folktale from Comanche people, Native American Indians, North America.
[38] Skunk is a squirrel-like animal. See its picture above.

वहॉ आ पहुँचा। उसने देखा कि बहुत सारी गिलहरियॉ अपने अपने बिलों से निकल कर बाहर खेल रहीं हैं।

इतने में कायोटी ने उनसे ज़ोर से पुकार कर कहा — "देखो न गिलहरियों, हमारा दुश्मन तो मर चुका है। क्यों न हम इसके चारों ओर नाच नाच कर खुशियॉ मनायें।"

मूर्ख गिलहरियों ने वैसा ही किया जैसा कायोटी ने उनसे करने के लिये कहा। कायोटी बोला — "हम लोग एक बड़ा सा गोला बना कर ऑखें बन्द कर के नाचेंगे। अगर किसी ने ऑखें खोलीं तो उसके साथ तुरन्त ही कुछ बुरा होगा।"

ऐसा ही हुआ। सब गिलहरियों ने ऑखें बन्द कर के नाचना शुरू कर दिया। उधर तुरन्त ही कायोटी ने उनमें से एक गिलहरी को मार दिया और बोला, "अब अपनी ऑखें खोलो।"

जब सारी गिलहरियों ने अपनी ऑखें खोलीं तो उनको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उनमें से उनकी एक प्रिय गिलहरी मरी पड़ी थी।

कायोटी तुरन्त बोला — "देखो न इस बेचारी ने नाच के बीच में अपनी ऑख खोलीं तो यह मर गयी। अब तुम लोग फिर अपनी ऑख बन्द कर के नाचो। और हॉ याद रखना अगर बीच में तुममें से किसी ने भी अपनी ऑखें खोली तो वह मर जायेगी।"

सो उन गिलहरियों ने अपनी अपनी ऑखें फिर से बन्द कर लीं और फिर से नाचना शुरू कर दिया। कायोटी ने एक एक कर के उन गिलहरियों को मारना शुरू कर दिया।

उनमें से एक गिलहरी को कुछ शक सा हुआ तो उसने बीच में थोड़ी सी ऑख खोल कर देखा तो उसको पता चल गया कि कायोटी ही उन सबको मार रहा था।

बस, उसने शोर मचा दिया और सारी गिलहरियॉ नाच छोड़ कर अपने अपने बिलों में घुस गयीं। स्कंक भी उठ कर खड़ा हो गया। वह खुश था कि कायोटी की यह चाल कितनी आसानी से काम कर गयी।

दोनों ने मिल कर लकड़ियॉ इकट्ठी कीं और आग जलायी। फिर उस आग में उन्होंने उन गिलहरियों को भूनना शुरू किया।

मॉस की सुगन्ध ने कायोटी को पागल सा कर दिया। उसने सोचा कि उस मॉस का सबसे अच्छा हिस्सा वह खुद खायेगा सो इसके लिये उसने एक चालाकी खेली।

वह स्कंक से बोला — "स्कंक भाई, हम लोगों को एक दौड़ दौड़नी चाहिये। उस दौड़ में जो भी जीत जायेगा वही गिलहरियों का सबसे ज़्यादा मजेदार मॉस खायेगा।"

स्कंक भी चालाक था बोला — "नहीं भाई नहीं, यह शर्त तो ठीक नहीं है क्योंकि तुम तो दौड़ में बहुत तेज़ हो। मैं तो तुमसे दौड़

में कभी जीत ही नहीं सकता तो मुझे तो कोई मजेदार गिलहरी कभी मिलेगी ही नहीं।"

इस पर कायोटी बोला — "कोई बात नहीं, तुम खुश रहो। मैं अपने पैर में एक पत्थर बाँध लूँगा तब दौड़ूँगा।"

स्कंक बोला — "हाँ, यह ठीक है। अगर तुम अपने पैर में एक बड़ा पत्थर बाँध लो तो मैं इस दौड़ को दौड़ने के लिये तैयार हूँ।"

कायोटी बोला — "ठीक है, मैं यहाँ यह पत्थर अपने पैर से बाँध रहा हूँ तब तक तुम आगे चलो। मैं भागने वाली सीटी बजाऊँगा और फिर तुमको आ कर पकड़ लूँगा।"

स्कंक भाग लिया और तुरन्त ही कायोटी की नजरों से ओझल हो गया।

कायोटी ने अपने पैर में पत्थर बाँधा और धीरे धीरे भागना शुरू किया। कुछ दूर पहुँच कर उसने अपने पैर से पत्थर निकाल फेंका और बहुत तेज़ भागने लगा।

इधर स्कंक थोड़ी दूर भागने के बाद ही रुक गया और बीच में ही एक पत्तों के ढेर में छिप गया। उसने कायोटी को तेज़ी से भागते देखा तो वह वापस आग के पास लौट आया।

उसने जल्दी जल्दी सारी गिलहरियाँ आग में से निकालीं। उनमें से दो गिलहरियाँ बहुत पतली सी थीं सो वे उसने फिर से आग में डाल दीं।

बाकी गिलहरियों की पूँछ काट कर उसने उन पूँछों को भी आग में दबा दिया और मोटी मोटी गिलहरियाँ ले कर वह अपने पत्तों के ढेर के पास वापस आ गया।

उधर कायोटी तेज़ी से भागता चला जा रहा था। वह सोच रहा था कि स्कंक शायद उसके आगे ही होगा परन्तु उसको तो वह सारे रास्ते कहीं दिखायी ही नहीं दिया।

वह कहाँ होगा, वह दिखायी क्यों नहीं दिया, वह इतनी तेज़ कैसे भागा, यही सब सोचते सोचते वह आग के पास आ गया।

उसने देखा कि बहुत सारी पूँछें आग के बाहर निकल रहीं थीं। उसने एक पूँछ पकड़ कर खींची तो वह बाहर निकल आयी।

इस तरह उसने कई पूँछें पकड़ कर बाहर खींचीं तो वे सारी की सारी बाहर निकल आयीं पर उनमें गिलहरी एक भी नहीं थी। वे सारी की सारी उनकी पूँछें ही पूँछें थीं।

सारी पूँछें मजेदार थीं परन्तु कायोटी को कुछ शक हुआ सो एक डंडी ले कर उसने आग में घुमायी तो उसमें उसको केवल दो पतली सी गिलहरी दिखाई दीं जिन्हें स्कंक छोड़ गया था।

"लगता है किसी ने हमारा खाना चुरा लिया है।" कहते हुए कायोटी ने वे दोनों पतली गिलहरियाँ खा लीं।

स्कंक ने भी अब तक अपना खाना खत्म कर लिया था। वह एक पहाड़ी की चोटी पर चढ़ गया। वहाँ से वह कायोटी को देख

रहा था। जब कायोटी वे दोनों गिलहरियॉ खा रहा था तो उसने ऊपर से कुछ बची हुई हड्डियॉ कायोटी की तरफ फेंकीं।

यह देख कर कायोटी चिल्लाया — "तुम सारा बढ़िया वाला मॉस खा गये थोड़ा सा उसमें से मुझे भी दो न।"

स्कंक चिल्लाया — "क्यों दूँ मैं तुमको बढ़िया वाला मॉस? उसके लिये तो तुमने दौड़ रखी थी न? मैं दौड़ में जीत गया तो वह मॉस मेरा हो गया इसलिये अब तुम्हारा उस मॉस में कोई हिस्सा नहीं रहा।"

कायोटी ने स्कंक से बहुत प्रार्थना की, बहुत प्रार्थना की कि वह उसको बढ़िया वाले मॉस में से कुछ टुकड़े दे दे परन्तु वह तो तब तक अपना आखिरी कौर खा कर रफू चक्कर हो चुका था।

इस तरह स्कंक ने होशियार कायोटी को बेवकूफ बनाया।

13 चीता और छोटा स्कंक[39]

स्कंक की यह लोक कथा दक्षिणी अमेरिका में रहने वाले माया लोगों की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि एक भला सा चीता था और एक मादा स्कंक[40] थी। मिसेज़ स्कंक के एक बेटा था जिसको चीते ने बैप्टाइज़[41] किया था इसलिये मिसेज़ स्कंक उसकी गौडमदर[42] बन गयी थी और क्योंकि मिस्टर चीते ने उसको बैप्टाइज़ किया था तो वह मिसेज़ स्कंक का गौडफादर[43] बन गया था।

एक बार मिस्टर चीते ने अपना खाना ढूँढने जाने का विचार किया तो वह मिसेज़ स्कंक के घर आया।

मिसेज़ स्कंक ने उसको अपने घर में देख कर पूछा — "मिस्टर चीते तुम यहाँ क्या ढूँढ रहे हो? तुम यहाँ किसलिये आये हो?"

मिस्टर चीता बोला — "मैं यहाँ कुछ खाना ढूँढने आया हूँ।"

---

[39] The Jaguar and the Little Skunk – a folktale from Maya people, South America.
Taken from the Web Site :
http://www.worldoftales.com/South_American_folktales/South_American_Folktale_4.html

[40] Skunk is big squirrel-like animal. See its picture above.

[41] Baptization is a Christian ceremony where the child officially becomes Christian. In this ceremony either the child is immersed in water, or water is sprinkled over his/her head, water is poured over him/her.

[42] A godmother is a female godparent in the Christian tradition. A Godmother may also refer to: a female arranged to be legal guardian of a child if an untimely demise is met by the parents.

[43] A godfather is a male godparent in many Christian traditions or a man arranged to be the legal guardian of a child in case the parents die before adulthood or the age of maturity.

"ओह।"

"मैं चाहता हूँ कि मेरा गौडसन मेरे साथ चले ताकि वह कुछ शिकार करना सीख ले।"

मिसेज़ स्कंक बोली — "मुझे नहीं लगता कि तुम्हारे गौडसन को तुम्हारे साथ शिकार करने के लिये जाना चाहिये। वह अभी बहुत छोटा है और अगर उसे कुछ हो गया तो। ओ गौडफादर उसके लिये यही अच्छा रहेगा कि वह अभी शिकार पर न जाये।"

पर छोटे स्कंक ने कहा कि वह जायेगा। वह बोला — "नहीं मॉ। मुझे लगता है कि मुझे जाना चाहिये। जो मेरे गौडफादर कह रहे हैं वह ठीक ही कह रहे हैं। मुझे शिकार करने की आदत डालनी चाहिये। मैं उनके साथ शिकार पर जा रहा हूँ।"

मिसेज़ स्कंक बोली — "बेटा अगर तू जायेगा तो बहुत दूर चला जायेगा।"

"नहीं मॉ मैं जा रहा हूँ। आइये गौडफादर चलिये चलें।" और वे दोनों शिकार पर चल दिये। रास्ते में मिस्टर चीते ने छोटे स्कंक से कहा — "हम लोग एक नदी की तरफ जायेंगे।"

छोटे स्कंक ने पूछा — "हम लोगों को वहॉ पहुँचने में कितनी देर लगेगी?"

"बस हम लोग वहॉ अब पहुँचने ही वाले हैं। मेरे पीछे पीछे आते रहना ताकि तुम खो न जाओ।"

"ठीक है।" आखिर वे एक नदी के किनारे आ गये।

वहाँ पहुँच कर मिस्टर चीते ने छोटे स्कंक से कहा — "हम लोग यहीं खाना खाने वाले हैं।"

छोटा स्कंक फिर बोला — "ठीक है।"

"तुम यहाँ आ जाओ। अब मैं अपना चाकू तेज़ करने जा रहा हूँ।"

छोटे स्कंक ने अपने गौडफादर की तरफ देखा और बोला "ठीक है।"

असल में तो मिस्टर चीता अपने पंजों के नाखून तेज़ कर रहा था जिनको वह चाकू बोल रहा था। अपने पंजों के नाखून तेज़ कर के वह बोला — "मैंने अपने पंजों के नाखून तेज़ कर लिये है अब तुम यहाँ बैठ कर रखवाली करो क्योंकि मैं अब सो रहा हूँ। जब तुम उनको आते देखो तो मुझे उठा देना।"

"ठीक है गौडफादर।"

मिस्टर चीता बोला — "और हाँ देखो चिल्लाना नहीं। जब वे आ जायें तो बस मेरा पेट खुजा देना ताकि मैं उनको चौंका कर भगा न दूँ। पर अगर कोई छोटे सींग वाला जानवर आये तो मुझे जगाना नहीं जब तक कि कोई बड़े सींग वाला जानवर न हो।"

"ठीक है।"

और तब एक बड़े सींग वाला जानवर आया तो छोटे स्कंक ने चीते को जगाया। उसने उसका पेट खुजाया और एक हिरन की

तरफ इशारा किया तो चीते ने उस पर हमला किया और उसको पकड़ लिया।

चीता बोला — "आओ गौडसन अब इसे खाते हैं। आज हम मॉस खायेंगे।"

छोटा स्कंक बोला "ठीक है।" और दोनों ने उस हिरन को खूब खाया।

खाने के बाद चीता बोला — "बाकी बचा हुआ मॉस अब हम तुम्हारी मॉ के लिये ले चलते हैं। क्योंकि अब हमारा पेट भर गया है तो बाकी बचा हुआ मॉस तो हम तुम्हारी मॉ के लिये ले ही जा सकते हैं। आज तुम्हारी मॉ भी वैसे ही मॉस खायेगी जैसे हमने खाया।"

जब वे दोनों घर आये तो चीते ने मिसेज़ स्कंक से कहा — "ज़रा यह खाना तो देखो। हम तुम्हारे लिये कुछ खाना ले कर आये हैं। हमने इसी खाने का शिकार किया था। गौडमदर पेट भर कर खाओ।"

मिसेज़ स्कंक ने कहा "ठीक है।" और उसने भी पेट भर कर खाना खाया। खाना खा कर वह बोली "बस अब मेरा पेट भर गया।"

मिस्टर चीता मिसेज़ स्कंक से बोला — "यह तो बहुत अच्छा है कि तुम्हारा पेट भर गया। मैं देख रहा हूँ कि तुम्हारा पेट वाकई भर गया है। अच्छा तो अब मैं चलता हूँ।" और वह वहॉ से चला गया।

चीते के जाने के बाद छोटा स्कंक अपनी मॉ के पास ही रहा। कुछ दिनों में उनका मॉस खत्म हो गया।

जब उनका सारा मॉस खत्म हो गया तो मिसेज़ सकंक ने अपने बेटे से कहा — "बेटा हमारा मॉस तो अब खत्म हो गया।"

"हॉ मॉ मॉस तो अब खत्म हो गया। मुझे लगता है कि मुझे अब शिकार पर फिर से जाना चाहिये और और मॉस लाना चाहिये।"

मिसेज़ स्कंक ने पूछा — "तू कैसे लायेगा बेटे। तू क्या सोचता है कि तू इतना बड़ा है कि शिकार कर के ला सके? नहीं मेरे बेटे नहीं। तू अभी बहुत छोटा है। क्या तुझे नहीं लगता कि तू मारा जायेगा?"

"नहीं मॉ नहीं। मुझे मालूम है कि शिकार कैसे करते हैं। मेरे गौडफादर ने मुझे शिकार करना सिखा दिया है। मैं जा रहा हूॅ।"

यह कह कर छोटा स्कंक वहॉ से चल दिया और मिसेज़ स्कंक उसके लिये परेशान हो गयी।

उसका बेटा उसी नदी के पास आया जहॉ वह अपने गौडफादर के साथ शिकार के लिये आया था।

छोटे स्कंक ने सोचा "मेरे गौडफादर ने ऐसा ही किया था फिर मैं ऐसा क्यों नहीं कर सकता। उन्होंने ऐसे ही अपना चाकू तेज़ किया था।" सो उसने भी अपना चाकू तेज़ किया।

"मेरे गौडफादर ने भी ऐसा ही किया था सो मैं भी छोटे जानवरों का शिकार नहीं करूँगा। मैं भी बड़े सींगों वाले बड़े जानवर का शिकार करूँगा।

मैं केवल अपने लिये ही एक वैसा ही शिकार करूँगा जैसा कि मैंने अपने गौडफादर के साथ खाया था। मेरा चाकू मेरे पास है और अब मैं थोड़ी देर के लिये सोता हूँ।"

और वह छोटा स्कंक वहीं लेट कर सो गया लेकिन फिर वह जाग भी गया। वह किसी बड़े सींग वाले जानवर का इन्तजार कर रहा था। जब वह आया तो उसने यह सोच कर उस पर हमला किया कि वह अपने गौडफादर की तरह ही ताकतवर था।

पर वह तो उसके उस बड़े सींग वाले जानवर की गरदन से लटक कर रह गया। उसके पंजे उसकी खाल में घुस गये थे। वह अभी भी उसकी गरदन से लटका हुआ था और वह जानवर उसको दूर लिये जा रहा था। फिर वह पीठ के बल नीचे गिर पड़ा। उसका तो मुँह खुला का खुला रह गया।

जब काफी देर तक स्कंक अपनी माँ के पास नहीं लौटा तो माँ को चिन्ता हुई — "मेरे बेटे को क्या हो गया? वह अभी तक वापस क्यों नहीं आया? उसको जरूर ही कुछ हो गया है। मैं जा कर उसे देखती हूँ।"

मिसेज़ स्कंक अपने बेटे को देखने के लिये नदी के पास पहुँची। उसने अपने बेटे को वहाँ इधर उधर देखा पर वह उसको

कहीं दिखायी नहीं दिया पर जब उसने उस बड़े सीगों वाले जानवर के आने के कदमों के निशान देखे तो वह तो रो पड़ी।

"लगता है वे यहॉ आये थे।" और वह उन कदमों के निशानों के पीछे पीछे जाने लगी। चलते चलते वह वहॉ आयी जहॉ उसका बेटा गिरा पड़ा था।

जैसे ही मॉ स्कंक ने अपने बेटे को देखा तो उसने देखा कि उसके तो दॉत दिखायी दे रहे थे। उसके पास तक पहुँचने से पहले ही वह उसके ऊपर चिल्लायी — "मेरे बेटे तू किस पर हॅस रहा है? तेरे तो सारे दॉत दिखायी दे रहे हैं।"

उसके पास पहुँच कर वह उससे बोली — "ला अपना हाथ मुझे दे। मैं तुझे लेने आयी हूँ और तू है कि मेरे चहरे की तरफ देख कर हॅसे जा रहा है।"

उसने यह सोच कर उसके ऊपर अपना हाथ रखा कि वह अभी भी ज़िन्दा था पर जब उसने उसको ध्यान से देखा तो उसने देखा कि उसका बेटा तो मर चुका था तो वह बहुत ज़ोर से रो पड़ी।

List of Stories of “Chipmunk, Skunk and Mink”

1. How the Chipmunk Got Stripes
2. How the Chipmunk Got Their Stripes
3. How the Chipmunk Got Its Stripes
4. How the Chipmunk Got Its Stripes
5. Chipmunk and Bear
6. The Noisy Chipmunk
7. Chipmunk and Hyena
8. Story of the Mink
9. Mink and the Sun
10. Cheecheka Mink
11. Raven and Mink
12. Skunk Outwits Coyote
13. The Jaguar and the Little Skunk

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस सीरीज़ में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं
पुस्तक सूची प्राप्त करने के लिये इस पते पर लिखें hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। उसके बाद **1976** में भारत से नाइजीरिया पहुँच कर यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस कर के एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया। उसके बाद इथियोपिया की एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो की नेशनल यूनिवर्सिटी में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला।

तत्पश्चात **1995** में यू ऐस ए से फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स कर के **4** साल एक ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में सेवा निवृत्ति के पश्चात अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022